



## प्रो. आर.सी. डेका, निदेशक Prof. R.C. Deka, Director

भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी, आदरणीय एम्स अध्यक्ष तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री गुलाम नबी आजाद, माननीय सांसदगण, विदेशी दूतावासों से पधारे माननीय अतिथिगण, संस्थान के सम्मानित सदस्यगण, प्रतिष्ठित अतिथिगण, मेरे सम्मानित सहयोगीगण-संकायाध्यक्षा, कुल-सचिव तथा संकाय-सदस्यगण, प्रिय छात्रों, आदरणीय अभिभावकगण, प्रेस के सदस्य, देवियों एवं सज्जनों :

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के 40वें वार्षिक दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मैं आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

वर्ष 1956 में संसद के एक अधिनियम के द्वारा सरकार द्वारा स्थापित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ने अपनी 56 से अधिक वर्ष की यात्रा के दौरान, चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान तथा बेहतर रोगी उपचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संस्थान ने न केवल स्वास्थ्य व्यावसायिक शिक्षा तथा जैवचिकित्सीय अनुसंधान में अपना नेतृत्व प्रदान किया है अपितु अपने आपको सर्वश्रेष्ठ सेवा प्रदाता के रूप में भी स्थापित किया है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में 10,000 से अधिक लोग कार्यरत हैं जिसमें 750 से अधिक संकाय-सदस्यगण, रेजीडेन्ट डॉक्टर, नर्स, परा-चिकित्सा स्टाफ, वैज्ञानिक, गैर-चिकित्सीय अधिकारीगण तथा कर्मचारीगण सम्मिलित हैं।

संस्थान द्वारा अब तक कुल 5022 विशेषज्ञों (एम.डी./एम.एस./एम.डी.एस./एम.एच.ए.-144/2012), 1259 अति-विशिष्टता विशेषज्ञों (डी.एम/एम.सी.एच.-61/2012), 2596 एम.बी.बी.एस. डॉक्टरों (42/2012), 944 पी-एच.डी. (73/2012) तथा 718 स्नातकोत्तरों (एम.एस-सी. तथा एम.बायोटेक 52/2012) को सम्बद्ध स्वास्थ्य एवं आधारभूत विज्ञानों में तैयार किया गया है। संस्थान द्वारा अब तक 93 बी.एस-सी. (ऑनर्स) स्तर के व्यक्तियों सहित 2481 नर्सों एवं परा-चिकित्सा कार्यकर्ताओं को भी प्रशिक्षित किया गया है।

निस्सन्देह इन आंकड़ों में विभिन्न विषयों एवं आयुर्विज्ञान तथा सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान की शाखाओं में आज प्रदान की गई 465 उपाधियां भी सम्मिलित हैं।

आज खुशी और जश्न का दिन है। इस अवसर पर, मैं अपनी-अपनी उपाधियों, पदकों तथा शैक्षिक विशिष्टता प्रमाणपत्रों को प्राप्त करने वाले सभी छात्र-छात्राओं को बधाई देता हूँ। मैं उनसे यह भी अपील करना चाहूंगा कि वे हमेशा अपने संस्थान तथा मातृभूमि की मान-मर्यादा को बनाए रखें।

संस्थान क्रमिक आयुर्विज्ञान शिक्षा कार्यक्रमों, सम्मेलनों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से अपने ज्ञान एवं विशेषज्ञता को परस्पर आदान-प्रदान करने में भी सक्रिय रहा है। अल्पकालीन प्रशिक्षण योजना के तहत, संस्थान ने 8 विश्व स्वास्थ्य संगठन फैलो सहित 42 विदेशी नागरिकों को स्नातकोत्तर प्रशिक्षण प्रदान किया। वर्ष के दौरान, संस्थान में 49 विदेशी स्नातकों ने भी वैकल्पिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष के दौरान, विभिन्न राज्यों से 845 डॉक्टरों तथा अन्य स्वास्थ्य उपचार व्यावसायिकों ने संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इन वर्ष संस्थान में नए एम.बी.बी.एस. छात्रों को उनमें विश्वास एवं वरिष्ठ छात्रों के साथ आपसी संवाद तथा सहयोग को बढ़ाने के साथ-साथ विभिन्न कार्य-स्थलों के बारे में सीखने के लिए एक स्वयं संवर्धन कार्यक्रम प्रदान किया गया। नए रेजीडेन्ट डॉक्टरों तथा सहायक आचार्यों को उनके लाभ के लिए संचार एवं सुलभ हस्तकौशल अर्जन सहित अनुसंधान तथा रोगी उपचार में एक विशिष्ट रूप से डिजाईन किया गया अभिमुखी कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

संस्थान संवेदनशील रोगी उपचार सेवाएं प्रदान करने के साथ-साथ अनुसंधान तथा चिकित्सा शिक्षा में उच्च गुणवत्ता एवं मानकों के प्रति प्रतिबद्ध है। हमारे संकाय-सदस्यगण एवं वैज्ञानिक मानव जिनोमिक्स, अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम सहित प्रतिरक्षा



आनुवंशिकी, आणविक चिकित्सा, संरचनात्मक जैव विज्ञान तथा प्रोटीन संरचना, नव औषध विकास पर लक्ष्य जैसे क्षेत्रों में अग्रणी अनुसंधान में लगे हुए हैं। वे हृदय वक्ष तथा तंत्रिका विज्ञान में इमेजिंग विज्ञान के द्वारा नव निदानात्मक एवं इन्टरवेंशन प्रक्रियाओं पर भी कार्य कर रहे हैं। फीटल मेडिसिन, नवजात विज्ञान तथा कैंसर में अल्ट्रासाउण्ड निर्देशित प्रक्रियाएं भी नैमिक रूप से काम में लायी जा रही हैं। कार्डियक स्टेन्ट्स, कॉक्लियर इम्प्लान्ट्स, घुटने एवं कूल्हे के जोड़ों जैसे बायोकम्पैटिबल इम्प्लांट डिवाइस का प्रयोग करते हुए रोगी उपचार हेतु तकनीक आधारित नई-नई प्रक्रियाएं सहयोगी बायो-डिजाइन के द्वारा बहुत अधिक प्रायोगिक एवं नैदानिक रूप से व्यवहार में लायी जा रही हैं।

संस्थान में रोगों के निदान तथा विकृतिविज्ञान, प्रयोगशाला काय-चिकित्सा, सीरम विज्ञान, काय चिकित्सा तथा बाल चिकित्सा विज्ञान में अनुसंधान प्रारम्भ करने के लिए कई प्लेटफॉर्म आधारित प्रौद्योगिकी को परिनियोजित किया गया है।

हमारे संकाय-सदस्यों द्वारा हृदय शल्यचिकित्सा, तंत्रिका शल्य चिकित्सा, अस्थिरोग विज्ञान, कार्नियाप्लास्टी एवं रेटिनल थिरेपी, मधुमेह, रोबोटिक तथा अन्य कम आक्रामक सर्जरी जैसे क्षेत्रों में अग्रगामी रोगी उपचार कार्य किया गया है। ट्रॉमा उपचार केन्द्र में कार्यरत डॉक्टरों ने तीव्र तथा आपात उपचार चिकित्सा हेतु नैदानिक अनुसंधान संचालित किए हैं और एक सुरक्षित चिकित्सा प्रोटोकॉल एवं मार्गदर्शिका का विकास किया है। छात्रों एवं रेजिडेंट डॉक्टरों के लाभ के लिए प्रायोगिक प्रयोगशालाओं तथा सर्जिकल परिस्थितियों में व्यावहारिक कौशल विकास सहित चिकित्सा शिक्षा हेतु मेडिकल अनुकरण सिस्टम के द्वारा नव कौशल अर्जन विधियों को प्रचालन में लाया जा रहा है। वे इन मेडिकल अनुकरणों द्वारा संवेदनाहरण तथा अभिघात उपचार विषय जैसे विभिन्न स्टेजों पर नैमिक एवं गम्भीर उपचार चिकित्सा सीख रहे हैं। हमारे पास बल्लभगढ़ सामुदायिक अस्पताल में ग्रामीण एवं जन स्वास्थ्य व्यवसाय में स्नातक-पूर्व तथा स्नातकोत्तरों को प्रशिक्षण देने के लिए एक प्रभावशाली ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण कार्यक्रम भी है।

पिछले शैक्षिक वर्ष के दौरान इस संस्थान के संकाय तथा वैज्ञानिकों के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं, लिखित पुस्तकों एवं मोनोग्रामों में 1700 से अधिक अनुसंधान लेख प्रकाशित हुए तथा उन्होंने काफी बड़ी संख्या में पुस्तकों में अध्यायों का भी योगदान दिया। अनुसंधान फ़ैलो, अनुसंधान एसोसिएट्स तथा पी-एच.डी. छात्रों जैसे विभिन्न स्तरों पर कार्यरत 500 से ज्यादा युवा वैज्ञानिक महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाओं में लगे हुए हैं। 632 अनुसंधान परियोजनाएं चल रही हैं और इनको ₹.65.4 करोड़ की बाहरी निधियां प्राप्त हुईं जोकि पिछले वर्ष की निधियों से 25 प्रतिशत अधिक हैं और यह बहुत गौरव की बात है। मैं इस उपलब्धि के लिए अपने सहयोगियों को बधाई देना चाहूंगा। इस वर्ष 146 अनुसंधान परियोजनाएं सफलतापूर्वक पूर्ण की गईं जिनसे संस्थान में नई जानकारी एवं उपयोगी अनुसंधान आंकड़े प्राप्त हुए। आघात, मस्तिष्क ट्यूमर, स्टेम सैल अध्ययन, औषध डिजाइनिंग, प्रोटीन अनुसंधान, आनुवंशिकी तथा प्रतिरक्षा विज्ञान जैसे नए क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए 126 नई अनुसंधान परियोजनाओं को प्रारम्भ करने के लिए युवा संकाय-सदस्यों को ₹.3 करोड़ की संस्थागत निधियां भी वितरित की गईं। यह अनुसंधान अनुभाग द्वारा किया गया एक प्रशंसनीय प्रयास था जोकि एक संकायाध्यक्ष एवं एक उप-संकायाध्यक्ष के अन्तर्गत पूरी तरह आयोजित किया गया एवं बढ़ाया गया है। संस्थान के निदेशक की अध्यक्षता में गठित अनुसंधान सलाहकार परिषद द्वारा वर्ष के दौरान नवीन अनुसंधान क्षेत्रों की पहचान करने के साथ-साथ हमारी अनुसंधान क्षमताओं को बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं जिनका प्रमाण समीक्षाधीन वर्ष के दौरान शुरू की गई परियोजनाएं एवं प्रकाशन हैं।

25 सितम्बर को संस्थान के स्थापना दिवस समारोह के दौरान, 18 संकाय-सदस्यों को पिछले वर्ष के दौरान उनके विशिष्ट अनुसंधान प्रकाशनों हेतु नकद पुरस्कार एवं विशिष्टता प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर एक स्वास्थ्य प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसमें स्वास्थ्य विज्ञान में संस्थान के योगदान को प्रदर्शित किया गया था। यह एक प्रकार से पिछले तीन वर्षों के दौरान प्रारम्भ की गई विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों का चिन्तन था। पहली बार “एम्स स्थापना दिवस व्याख्यान” का आयोजन किया गया एवं इसमें जर्मनी के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक एवं नोबल शास्त्री प्रोफेसर रॉबर्ट हूबर ने प्रोटीन संरचना एवं इसका आधुनिक चिकित्सा विज्ञान पर प्रभाव विषय पर व्याख्यान दिया। युवा डॉक्टरों एवं छात्रों के लिए यह एक बहुत ही प्रेरणा का अनुभव था।

वर्तमान में, एम्स अस्पताल में दंत चिकित्सा में दिवस उपचार के बिस्तरों को मिलाकर बिस्तरों की क्षमता कुल 2424 हो गई है। गत वर्ष के दौरान, एम्स की ओ.पी.डी. एवं कैजुएल्टी में कुल 25,78,396 रोगियों का उपचार, कुल 1,72,036 रोगियों का दाखिला एवं 1,37,019 रोगियों के ऑपरेशन किए गए। संस्थान द्वारा रोगी उपचार सेवाओं में लगभग 80% बिस्तर अधिभोग दर तथा अस्पताल में भर्ती रहने की अवधि लगभग 6 दिन की दर से आदर्श पैमाने को बनाए रखा गया। एम्स अस्पताल में 8.3% की मिश्रित अपरिष्कृत संक्रमण दर के साथ कुल 3% से भी कम मृत्यु दर रिपोर्ट दर्ज की गई।

पिछले वर्ष, पुल्मोनरी मेडिसिन, सर्जिकल ऑनकोलोजी एवं जरा चिकित्सा में नवीन स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों (डी.एम., एम. सी-एच., एम.डी.) को आंतरिक रोगियों के लिए पृथक वार्ड सहित पूर्णरूप से कार्यशीलता के साथ आरम्भ किया गया। एक कनवर्जेंस सेंटर के भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जिसमें हमारे संकाय-सदस्यों एवं छात्रों को अनुसंधान हेतु अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी आधारित सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। यह वास्तव में, एक ज्ञान केन्द्र के रूप में होगा जिससे हमें अनुसंधान में हमारी क्षमता को बढ़ाने हेतु बड़े पैमाने पर नैदानिक सामग्री एवं अनुसंधान आंकड़ों का संग्रह एवं कार्य-संचालन किया जाएगा। यह ब्लॉक अगले वर्ष तक पूर्ण हो जाना चाहिए।



हम सब जानते हैं कि लोगों को संस्थान से बड़ी आशाएं हैं। हमने देश में कम लागत में विशिष्ट चिकित्सा उपचार उपलब्ध करवाने का प्रयास किया है और इसमें सफल भी हुए हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि आम जन के रूप में लोगों ने तथा विशेष रूप से रोगियों ने हम पर बहुत विश्वास किया है। मैं, अपने सहकर्मियों की ओर से हमारे पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य करना चाहूंगा कि हम कभी भी अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हटेंगे। मैं इस अवसर पर अपने सभी संकाय-सदस्यों, डॉक्टरों, रेजीडेंट्स, नर्सों तथा अन्य सहयोगियों को अपना सहयोग देने व अपनी प्रतिबद्धता दिखाने के लिए हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हमने देश की संसद द्वारा दिए गए शासनादेश का पालन किया है। हमारे काम और प्रतिबद्धता को जनता द्वारा और साथ ही साथ राष्ट्र के नेताओं द्वारा उत्कृष्टतापूर्वक अपना समर्थन प्रदान किया गया है। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि एम्स ने एक ब्रांडवैल्यू प्राप्त कर ली है जिसे भारत सरकार सहित राज्य सरकारों और विदेशी संस्थानों द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। केन्द्रीय सरकार द्वारा अभी हाल ही में विभिन्न राज्यों में एम्स जैसे 6 संस्थानों में एम.बी.बी.एस. का पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया है। हम संस्थान में वास्तविक शिक्षा प्राप्ति का माहौल स्थापित करके तथा संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ सहयोग से इन संस्थानों का पालन पोषण एवं मार्गदर्शन करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहे हैं।

जहां एम्स आयुर्विज्ञान तथा रोगी उपचार में श्रेष्ठता के राष्ट्रीय कीर्तिमान बनाए हुए हैं वहीं इसका सरकार, मीडिया तथा जनसमूह द्वारा बारीकी से अवलोकन एवं मॉनिटरिंग भी की जाती है। अतः हमें लगातार सुधार एवं विकास में लगे रहना है तथा सहयोगी प्रयासों से ट्रांसलेसनल चिकित्सा जैसे नवीनतम क्षेत्रों पर भी केन्द्रित होना होगा। यह सत्य है कि रोगियों को प्रदान की जा रही हमारी उत्तम उपचार चिकित्सा के कारण संस्थान में रोगियों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है जिस कारण हमें अपनी कुछ प्राथमिकताओं पर समझौता करने के लिए विवश होना पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप संस्थान की शैक्षिक एवं अनुसंधान गतिविधियों पर प्रभाव पड़ा है। यह हम सभी के लिए एक बड़ी चुनौती है। संस्थान के निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें इसकी शैक्षिक विशेषता की रक्षा करनी होगी। सरकार तथा संसद को इस मुद्दे पर सावधानीपूर्वक विचार करना होगा और आवश्यक दिशा-निर्देश देने होंगे। जैसा कि संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री आजाद जी ने अपने भाषण के दौरान कहा कि संस्थान जैसे उन 6 एम्स तथा अन्य 19 सरकारी मेडिकल कालेजों की भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से उनकी सुविधाओं में वृद्धि की गई, मुझे आशा है कि हम सही मायनों में एक परामर्शदायी स्वास्थ्य उपचार संस्थान (रेफरल हेल्थ इंस्टीट्यूट) के रूप में सेवा प्रदान करने में सक्षम होंगे और प्रभावी रूप से उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान में अपना भरपूर योगदान दे सकेंगे।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि हमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से जैव आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे नवीन आविष्कारों के साथ गतिमान होना है और प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए हमारी जनता की स्वास्थ्य समस्याओं के लिए कम लागत वाला समाधान उपलब्ध कराना है। सरकार के सहयोग से संस्थान द्वारा वर्तमान परिसर में अपनी क्षमता बढ़ाने हेतु विस्तार कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। संक्रामक रोगों, मोलेक्यूलर चिकित्सा, पोषण, कैंसर सहित गैर संचारी रोगों, टीका विकास एवं पुनर्जनन विज्ञान जैसे क्षेत्रों में विशिष्टता का एक विश्व स्तरीय केन्द्र विकसित करने हेतु योजनाएं बनाते समय रोगियों हेतु आउटरीच ओ.पी.डी. सेवाएं प्रारंभ करने के लिए हमने हरियाणा के झज्जर परिसर में कार्य आरंभ भी कर दिया है।

भारत एक ज्ञान-विकास आधारित एवं प्रौद्योगिकी आधारित समाज बनने की ओर अग्रसर है। पूरा विश्व हमें देख रहा है। हमें अपनी आगामी पीढ़ी के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनानी होगी। वास्तव में गुणवत्ता एवं विकास की गति बनाए रखना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है जो कि स्वास्थ्य उपचार के क्षेत्र में बहुत ही आवश्यक है। भारत में स्वास्थ्य उपचार क्षेत्र हेतु एक विशाल एवं कुशल कार्यदल तैयार करने सहित बढ़ती आम जनता की स्वास्थ्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षमताओं में विस्तार भी अति महत्वपूर्ण है। इस समय हम तकनीकी एवं परा-चिकित्सीय स्तरों पर कुशल स्वास्थ्य उपचार कर्मियों की अत्यधिक कमी महसूस कर रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम राष्ट्रीय कुशलता विकास परिषद तथा अन्य ऐसे संस्थानों सहित संस्थानों के बीच में सहयोगात्मक प्रयासों से इन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे। हम शीघ्र ही आयुर्विज्ञान अनुरूपण प्रणाली में अपनी सुविधा एवं क्षमता में वृद्धि करेंगे तथा छात्रों एवं संकाय-सदस्यों हेतु वास्तविक शिक्षण एवं शिक्षा-प्राप्ति के लिए अनुकूल वातावरण स्थापित करेंगे।

महोदय, इस खुशनुमा अवसर पर आपकी गरिमामयी उपस्थिति के लिए मैं संकाय-सदस्यों, स्टाफ, रेजीडेंट डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, नर्सों तथा छात्रों की ओर से तथा अपनी ओर से आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। आज हम अपनी खुशियां एवं उत्सव आपके साथ मनाकर वास्तव में बहुत खुश हैं। इन वर्षों के दौरान संस्थान के समग्र विकास के लिए अपना निरंतर सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए मैं एम्स अध्यक्ष एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद जी का भी बहुत आभारी हूँ।

अंत में, मैं आप सभी के स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता हूँ।

इस अवसर पर पधारने के लिए मैं आप सभी का धन्यवाद करता हूँ।

**जयहिंद**